संस्कृत-विभाग

अन्तर्राष्ट्रिय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केन्द्र

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

राष्ट्रिय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् ' ए ' ग्रेड विश्वविद्यालय

एक दिवसीय राष्ट्रिय वेबिनार

रामायण का वैश्विक स्वरूप

दिनांक : 19 सितम्बर, 2020 समय : 11 बजे प्रातः

प्रस्तावना

रामायण और राम भारतीय संस्कृति के पुँज कहे जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। रामायण विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रेरणा देती है। रामायण में श्रीराम का व्यक्तित्व संघर्ष और सत्यता, आज्ञापालन, प्रजा के अनुरंजन के लिए अपना सर्वस्व परित्यक्त तथा संघर्ष के लिए विपुल आकाश है। रामायण आज 21वीं सदी में भी विश्व के सभी प्राणियों के लिए ज्ञान और मूल्य की स्रोत रहेगी। क्योंकि इसमें राष्ट्र के प्रति भावना, त्याग और सभी प्राणियों का सार निहित है।

आज रामायण का प्रभाव भारत ही नहीं अपितु विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। विश्व की अन्य भाषाओं में रामकथा और राम के स्वरूप की व्याख्या हुई है। श्रीराम को विश्व के समग्र साहित्य में विशेष स्थान मिला है जिसके कारण से लोंगों के हृदय में उनका मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप अमिट है। उनका आदर्श स्वरूप भारतीय समाज में पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक स्वीकार्य है। भारत की प्रत्येक भाषा की अपनी रामकथाएँ हैं। इसके अतिरिक्त विश्व के अन्य देशों मंगोलिया, लाओस, थाईलैंड, पिलीपिंस, जावा, सुमात्रा, मलेशिया, म्यांमार, साइबेरिया, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, चीन, जापान, श्रीलंका, वियतनाम आदि में रामकथा प्रचलित है। इसके अतिरिक्त बौद्ध, जैन, इस्लामी रामायण भी हैं। मैक्समूलर, जोंस, कीथ, ग्रीफिथ, बारान्निकोब जैसे विदेशी विद्वान् भी श्रीराम के सत्यनिष्ठ, त्यागमय जीवन से आकर्षित थे। रामायण हमें एकता का सन्देश देती है। श्रीराम ने आर्य, निषाद, भील, वानर, राक्षस आदि की संस्कृतियों में सुमेल साधने का कार्य किया है।

इंडोनेशिया में मुस्लमानों की संख्या अधिक होने के बावजूद भी उनकी संस्कृति पर रामायण की गहरी छाप है। भारत में जो स्थान न्यायालयों में श्रीमद्भगवदगीता को प्राप्त है, इंडोनेशिया में वही स्थान रामायण को मिला है। वहाँ पर रामायण पर हाथ रखकर सत्यता की शपथ ली जाती है। इंडोनेशिया में श्रीराम की अनेकों प्रतिमाएँ मिलती है। जावा में योगीश्वर द्वारा रचित 'रामायण काकावीन' 26 सर्गों और 2778 श्लोकों में हैं जो कावी भाषा में लिखा गया है। इसका उद्देश्य श्रीराम के आदर्शों का अनुकरण कर उसे जनजीवन में उतारना है। प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इस रचना का देवनागरी में लिप्यन्तरण तथा हिन्दी रूपान्तर किया है। कम्बोडिया की रामायण एस. कार्पेल्स द्वारा 16 सर्गों में 'रामकेर्ति' नाम से ख्मेर लिपि में लिखित है। वहाँ पर रामायण को लोग 'रामकेर' के नाम से जानते हैं किन्तु साहित्य में वह रामकेर्ति के नाम से विख्यात है। जापान में 12वीं शताब्दी में रचित 'होबुत्सुशु' नामक ग्रन्थ में रामायण की कथा जापानी में मिलती है।

इसलिए विश्व में रामायणीय संस्कृति का प्रभाव होने से संस्कृत-विभाग, अन्तर्राष्ट्रिय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केन्द्र, हि0 प्र0 वि0 वि0 ने 'रामायण का वैश्विक स्वरूप' विषय पर वेबिनार आयोजित करने का संकल्प लिया है और इसके सफल आयोजन के लिए आप सभी बुद्धिजीवियों की सक्रिय भागीदारी अपेक्षित है। सम्पर्क ई0मेल : devmastetta@gmail.com

पंजीकरण लिंक : **https://forms.gle/V6fvJNj9UJkSsFvX6** अंतिम तिथिः 18 सितम्बर, 2020

एक दिवसीय राष्ट्रिय वेबिनार

रामायण का वैश्विक स्वरूप

दिनांक : 19 सितम्बर, 2020 समय : 11 बजे प्रातः

मुख्य संरक्षक

आचार्य सिकन्दर कुमार

माननीय कुलपति हि0प्र0 वि0 वि0

अध्यक्ष

आचार्य कुलवंत सिंह पठानिया

निदेशक, अ0दू0शि0मु0अ0कें0

मुख्य वक्ता

पद्मश्री अभिराज राजेन्द्र मिश्र

पूर्व कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी

विशिष्ट अतिथि

आचार्य राजिन्द्रा शर्मा

अधिष्ठाता भाषा संकाय

एंव अध्यक्ष संस्कृत-विभाग

संयोजक

डॉ0 देवराज

सहायक आचार्य

संस्कृत-विभाग, अ0दू0शि0मु0अ0कें0

आयोजन समिति

डॉ0 दीप लता, सहायक आचार्य, संस्कृत-विभाग

डॉ0 लता देवी, सहायक आचार्य, संस्कृत-विभाग

डॉ0 मंजु पुरी, सहायक आचार्य, हिन्दी, अ0दू0शि0मु0अ0कें0

डॉ0 ऊषा रानी, सहायक आचार्य, हिन्दी, अ0दू0शि0मु0अ0कें0